2 अक्टूबर 2006, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

समताभाव की प्राप्ति का एकमात्र उपाय वृत्ति का स्वभावसन्मुख होना ही है।
- बारह भावना : एक अनु., पृष्ठ :27

वर्ष : 29, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम), 06 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

नौवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर में दिनांक 28 सितम्बर से 7 अक्टूबर, 2006 तक नौवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन हो रहा है। शिविर का उद्घाटन गुरुवार, दिनांक 28 सितम्बर को प्रात: 8 बजे श्री अशोककुमारजी जैन इन्दौर (चेयरमैन, अरिहंत कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड) के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री बालचन्दजी पाटनी कोलकाता ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई (अहिंसा चैरिटेबिल ट्रस्ट) एवं विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़, श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री विमलचन्दजी प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, श्री प्रेमचन्दजी जैन अजमेर, श्री बालचन्दजी कोटा व श्री जुगराजजी कासलीवाल कोलकाता के अतिरिक्त ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका एवं ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल मंचासीन थे।

सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री महावीरप्रसादजी सरावगी कोलकाता व प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचन्दजी घेवरचन्दजी जैन (ओसवाल इण्डस्ट्रीज) जयपुर के करकमलों से किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का परिचय दिया गया। अन्य विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन के उपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में वर्तमान समय में शिविरों की उपयोगिता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना से लेकर आज तक चल रही गतिविधियों का उद्देश्य एकमात्र तत्त्वप्रचार ही है - यह बताया।

साथ ही ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष स्व.श्री पूरणचन्दजी गोदीका के त्याग, समर्पण व तत्त्वप्रचार की भावना का स्मरण दिलाते हुये संस्था की रीति-नीति से जन सामान्य को अवगत कराया।

अन्त में यही भावना व्यक्त की कि गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित यह तत्त्वज्ञान अनेक माध्यमों से घर-घर तक पहुँचे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री बालचन्दजी पाटनी कोलकाता ने गत वर्ष कोलकाता में सम्पन्न हुये पंचकल्याणक के पश्चात् वहाँ चल रही विशेष गतिविधियों का श्रेय इन आध्यात्मिक शिक्षण-शिविरों को ही दिया। उन्होंने कहा कि शिविर के माध्यम से ही तत्त्वप्रचार-प्रसार की अविरल धारा अनवरत रूप से चलती रह सकती है।

आपके अतिरिक्त श्री महावीरप्रसादजी सरावगी कोलकाता, श्री निहालचन्दजी जैन जयपुर, श्री प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई का भी उद्बोधन प्राप्त हुआ।

सभा का संचालन व आभार प्रदर्शन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया तथा मंगलाचरण कुमारी परिणति पाटील ने किया।

ज्ञातव्य है कि इस शिक्षण-शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी व उनके सुपुत्र अशोकजी पाटनी कोलकाता एवं श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोलकाता हैं। ●

अत्यन्त मर्मग्राही विवेचना

डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित **समयसार** की **ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका** को पढ़कर मराठी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक, पूर्व प्राचार्य एवं अनेक शिक्षण संस्थाओं के संचालक **श्री सुमेरचन्दजी जैन, सोलापुर** से लिखते हैं -1

''अत्यन्त हर्ष की बात यह है कि आपने अत्यन्त सरल, सुबोध और सब संशय वियोगिनी टीका की मधुरतम रचना की है।

सर्व एकान्तवाद को छोड़कर अत्यन्त मर्मग्राही विवेचना पहली बार पढ़कर परम संतोष हुआ। प्रखर पाण्डित्य के साथ ही सर्व सामान्यजनों को यह ग्रन्थ बहुत लाभदायक है। शायद पहली बार समयसार का इतना सटीक, सुस्पष्ट एवं तत्त्वार्थप्रबोधक विवेचन देखने में आया है।

आपके हृदयग्राही बहुचर्चित प्रवचन भी प्रतिदिन टी.वी. (साधना चैनल) पर सुनने का सुअवसर प्राप्त होता है।''

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

१३. पाप से घृणा करो, पापी से नहीं

ज्ञानेश का मित्र धनेश दुर्व्यसनी लोगों के सम्पर्क में रहने से अपनी झूठी शान–वान के चक्कर में व्यसनी तो हो गया था, पर बेईमान नहीं था। अपने व्यसनों की बुरी आदत के कारण हुई परिवार की परेशानियों को और अपने श्वसुर मोहन के दुखी परिवार को देखकर अब वह अपने व्यसनों को स्वयं भी बुरा मानने लगा था और उन्हें छोड़ने का मन भी बना चुका था, पर अभी वह छोड़ नहीं पा रहा था।

जहाँ कुछ समय पहले वह व्यसनों की बुराईयों को सुन भी नहीं सकता था, वहीं अब वह उन्हें त्यागने का बार–बार संकल्प भी करने लगा था।

जब वह ऐसी भावना व्यक्त करता तो ज्ञानेश सहित सभी परिजनों–पुरजनों को भारी प्रसन्नता होती, बहुत अच्छा लगता; परन्तु उसके संकल्प हफ्ते–दो हफ्ते से अधिक नहीं टिक पाते।

इन दुर्व्यसनों की प्रकृति ही कुछ ऐसी है, जो एक बार फँसा वह फँसता ही जाता है। फिर इनसे उबरना असंभव तो नहीं है, किन्तु बहुत कठिन काम है। इसीकारण इस बार उसके त्याग के संकल्प पर किसी ने कोई खास खुशी जाहिर नहीं की।

किन्तु इस बार धनेश ने सचमुच दृढ़ संकल्प के साथ सम्पूर्ण दुर्व्यसनों को जीवनपर्यन्त के लिए तिलांजलि दे ही दी और ज्ञानेश के सान्निध्य में प्रतिदिन नियमित होनेवाले सेमीनारों, संगोष्ठियों में सम्मिलित होने लगा। **यदि व्यक्ति का संकल्प दृढ़ हो तो दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है।**

धनेश के व्यसनों से विरक्त होने की चर्चा हवा में गंध की तरह गाँव भर में फैल गई। सर्वत्र सबके मुँह पर एक ही बात अरे ! सुना आपने ! धनेश ने दुर्व्यसन छोड़ने का पक्का इरादा कर लिया है। आश्चर्य प्रगट करते हुए कोई कहता – यह पश्चिम से सूरज कैसे निकल आया ?

कोई कहता – ''सौ सौ चूहे मार बिल्ली हज को चली है।''

एक आशावादी व्यक्ति बोला – ''अरे भाई ! इसमें कौन–सी असंभव बात है, **बड़े से बड़े धर्मात्मा भी धर्मात्मा बनने के पहले तो पापी ही थे। पापी ही तो पाप का त्याग कर एक न एक दिन पुण्यात्मा और धर्मात्मा बनते हैं।** श्रीकृष्ण के पुत्र शम्भुकुमार एवं राजा मधु की पौराणिक कथाएँ इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

हरिवंश पुराण में एक कथा है कि – महारानी जाम्बुवती की कोख से जन्मे शम्भुकुमार ने अपनी हवस को पूरा करने की खोटी भावना से अपने पिता श्रीकृष्ण को किसी तरह प्रसन्न करके पुरस्कार स्वरूप एक माह के लिए राज्य सत्ता प्राप्त की थी और जब शम्भुकुमार को सत्ता सौंपकर श्रीकृष्ण अज्ञातवास में चले गये तो अवसर पाते ही शम्भुकुमार ने अपनी पापमय कामवासना की स्वच्छंद प्रवृत्ति से ऐसे निर्लज्ज कार्य किए कि जिससे प्रजा त्राहि–त्राहि कर चीख उठी।

फिर भी पुराण कहते हैं कि उन्हीं शम्भुकुमार ने पापों का प्रायश्चित्त करके आत्म–साधना के अपूर्व पुरुषार्थ द्वारा गृहस्थपना छोड़कर निजस्वभाव साधन द्वारा कर्मों का क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया।

ऐसा ही दूसरा प्रसंग राजा मधु के साथ बना था। उसने अपने अधीनस्थ राजा हरिभद्र की पत्नी चन्द्राभा का अपहरण करके, उसे अपनी रखैल (उप–पत्नी) बनाकर घर में रख लिया। परिणामस्वरूप चन्द्राभा का असली पति अपनी प्रियतमा चन्द्राभा के वियोग में पागल हो गया और गली–गली घूम–घूमकर अपनी पत्नी को वापिस लौटा देने की गुहार करता रहा। फिर भी राजा मधु ने उसे नहीं लौटाया। ऐसा अन्याय करने पर भी राजा मधु ने अन्त में अपनी भूल सुधार कर स्वर्ग समान भोगभूमि में उत्तम गति प्राप्त की।

तीसरा बोला – इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि अरे भैया ! इन चक्करों से जब छूट पावे, तभी अच्छा। दुर्व्यसनों से पल्ला छुड़ाना आसान काम नहीं है।

जंग जीतना आसान है, पर व्यसनों से पार पाना कठिन है। जो दिन में दस–दस पैग पीता हो, दिन–रात शराब के नशे में धुत्त रहता हो; मुँह से रेलगाड़ी के कोयले के इंजन की तरह लगातार धुँआ छोड़ता ही रहता हो; रात–रात भर जागकर नृत्यांगनाओं के नृत्य–गान देखता–सुनता रहता हो; दिन भर आँखों में नींद भरे अर्द्ध विक्षिप्त–सा पड़ा रहता हो, जिसका न खाने–पीने का सही समय हो, न सोने–जागने का कोई निश्चित समय – ऐसा व्यक्ति जब भी, जो भी, जितनी भी बुराईयों का त्याग करता है, अच्छा ही है। आप ही सोचो।

चौथा बोला – ''यह सब ठीक है; परन्तु यह तो श्मशानियाँ वैराग्य है। जब डॉक्टर ने जवाब दे दिया कि – जाओ ! घर जाओ !! अब मेरे पास आने की जरूरत नहीं है। कहीं भी/किसी भी डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं है। बस, दो–चार माह और पीलो, खालो और मजे उड़ा लो, फिर तो.....कहते–कहते डॉक्टर चुप हो गया।

डॉक्टर को चुप देख धनेश ने लड़खड़ाती जबान में कहा – ''फिर...क्या.... ?''

डॉक्टर बोला – ''फिर तो जन्म–जन्मान्तरों में नरक और पशु पर्याय में जाकर शराब तो क्या ? पानी की एक–एक बूँद को और अन्न के एक–एक दाने को भी तरसना ही है।''

बीच में बात काटते हुए तीसरे ने पुन: पूछा – ''और क्या–क्या कहा था डॉक्टर साहब ने ?''

चौथे का उत्तर था –''अरे ! उन्होंने साफ–साफ कह दिया – धनेश! **सिगरेट व शराब पीने से तुम्हारें दोनों फेफड़े जर्जर हो गये हैं,** लीवर ने काम करना बन्द कर दिया है। मांसाहार से तुम्हारी आँतें बिल्कुल खराब हो गई हैं। बाजारू औरतों के सम्पर्क से तुम्हें 'एड्स' जैसी खतरनाक

जानलेवा बीमारी हो सकती है। सिगरेट, सुरा और सुन्दरी ने तुम्हारे अंग-अंग को क्षीण कर दिया है। जितने वर्ष तुम जी चुके हो, अब उतने महीने भी तुम्हारे जीने की आशा नहीं है।''

पाँचवाँ बोल उठा - ''अच्छा ! यह बात है, तभी तो मैं कहूँ कि यह पश्चिम से सूरज कैसे निकल आया ? अब समझ में आया कि मौत को माथे पर मँडराता देख धर्मात्मा बनकर परमात्मा को प्रसन्न करने का प्रयास किया जा रहा है; पर ऐसे पापियों से परमात्मा प्रसन्न होनेवाले नहीं हैं। भगवान इतने भोले थोड़े ही हैं, इसने भी उनकी कब सुनी जो वे इसकी सुनेंगे।''

चौथे ने पुन: कहा - ''अरे भाई ! तुम्हें अकेले उसी से इतनी चिढ़ क्यों है ? हम-तुम भी तो उसी थैली के चट्टे-बट्टे हैं। कोई दो कदम आगे तो कोई दो कदम पीछे। हो सकता है हम उस स्टेज पर भी न पहुँचें, हमें अपनी ओर भी तो देखना चाहिए। ऐसा न हो कि हम कुत्ते की मौत मरें और कान में धर्म के दो शब्द सुनाना तो दूर, कोई मुँह में पानी की दो बूँदें डालने वाला भी न मिले।''

इसी बात का समर्थन करते हुए छठवाँ बोला - ''अरे भाई ! ऐसी क्या बात करते हो ? आज जो महान हैं, वे भी तो कभी न कभी इसी तरह भूले-भटके ही थे। तभी तो वे संसार में जन्म-मरण करते रहे। जब संभले-सुधरे, तभी तो उन्हें भी मोक्ष मिला।

इसीलिए तो कहा है कि ''**पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।**'' **पापी तो कभी भी परमात्मा बन सकता है।**

भगवान महावीर के जीव को ही देख लो ! कहाँ पुरुरवा भील जैसा हिंसक हत्यारा, कहाँ मारीचि जैसा मिथ्यादृष्टि और कहाँ परमपूज्य भगवान महावीर स्वामी की परम पवित्र पर्याय ?

भील के भव में उन्होंने क्या-क्या पाप नहीं किये होंगे ? शराब भी पीते ही होंगे, मांस भी खाते ही होंगे। आखिर जंगली ही तो थे। अत: **भूत को तो भुलाना ही पड़ेगा। वर्तमान को संभालने से भविष्य अपने आप संभल जाता है। अत: वह जब चेता तभी ठीक। कल्याण होने में देर ही क्या लगती है ? अनन्त काल की भूलों को मेटने के लिए अनन्त काल थोड़े ही लगता है ? जिसप्रकार रातभर के स्वप्न जागते ही समाप्त हो जाते हैं; ठीक उसीप्रकार भेदज्ञान होते ही, सम्यग्ज्ञान का सूर्य उदित होते ही, सारा अज्ञान अन्धकार नष्ट हो जाता है और पापाचार छूट जाते हैं।**''

छठवें मित्र ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा - ''हाँ, अब भी यदि वह आत्मा का आश्रय न ले सका और मूलभूत सिद्धान्तों को न समझ सका, केवल बाह्य धर्मक्रियाओं को ही धर्म मानकर संतुष्ट हो गया तो वह पीड़ाचिंतन जैसे आर्तध्यान से स्वयं को नहीं बचा पाएगा। जब इतने भयंकर रोगों से उसकी देह ग्रसित है तो दर्द तो होगा ही। बार-बार उस दर्द की ओर ध्यान जाए बिना नहीं रहेगा। शारीरिक पीड़ा के साथ मानसिक पीड़ा भी होती ही है।

इस सबसे बचने के लिए देह और आत्मा की भिन्नता और व्यक्ति तथा वस्तुस्वातंत्र्य के सिद्धान्त को सतत् याद रखना, अपने किये पापों के फल का विचार और संसार की असारता का बारम्बर स्मरण करना अत्यन्त आवश्यक है।

अन्यथा पीड़ाचिंतन रूप आर्तध्यान का फल तो अधोगति ही है; क्योंकि इसमें परिणाम निरन्तर संक्लेशमय रहते हैं। अत्यन्त संक्लेश भावों से मरण करके भयंकर दुखद नरक में जाते हैं।

अत: यदि अपना कल्याण करने की अभिलाषा जगी हो तो ज्ञानेश जैसे व्यक्ति के सान्निध्य में रहना ही होगा, उनका सत्संग करना ही होगा।''

वैसे तो दुनिया में बहुत कलायें हैं; परन्तु उनमें दो मुख्य हैं - एक आजीविका और दूजी आत्मोद्धार अथवा एक जीविका और दूसरी जीवोद्धार। एक वर्तमान जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु और दूसरी परलोक में सुखद जीवन प्राप्त करने के लिए।

ज्ञानेश दोनों कलाओं में निपुण है। जीवन में सफलता के सूत्रों की चर्चा करते हुए उसने कहा था -

1. सर्वप्रथम यह ध्येय निश्चित करना कि - जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु न्याय-नीतिपूर्वक आर्थिक सम्पन्नता के साथ-साथ परलोक में सुखद आत्मकल्याणकारी संयोगों की उपलब्धि के लिए आध्यात्मिक वातावरण बनाना एवं उसके लिए साधन जुटाना।

2. ध्येय प्राप्त करने के लिए आयोजन (प्लानिंग) करना एवं आयोजनों को सफल करने के लिए परिश्रम से पीछे नहीं हटना।

3. ध्येय के अनुरूप वातावरण बनाना।

4. ध्येयों की सिद्धि के लिए अनुकूल अवसरों की तलाश करना एवं प्राप्त अवसरों का भरपूर उपयोग करना/कराना।

5. बीच-बीच में आये चेलेन्जों एवं समस्याओं को हँसते-हँसते स्वीकार करना एवं सकारात्मक समाधान खोजना।

इसप्रकार धनेश और ज्ञानेश को लेकर उसकी मित्रमण्डली में काफी अच्छा ऊहापोह हुआ। जिससे अनेक लोगों के भ्रम भी भंग हुए तथा बहुत से तथ्य भी सामने आये।

किसी ने ठीक ही कहा है - ''**वादे-वादे जायते तत्त्वबोध:।**''

ऐसी चर्चा करते-करते सभी अपने-अपने घर चल गये। ●

युवा चेतना शिविर सम्पन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ श्री नन्दीश्वर सेवा संघ द्वारा बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी के सान्निध्य में दिनांक 17 अगस्त से 25 अगस्त, 2006 तक युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया; जिसमें पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री (दाऊ) जयपुर, ब्र.अमितजी विदिशा, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर, कु.स्वाती जैन जयपुर का सहयोग मिला। ●

दशलक्षण समाचार ....

दशलक्षण महापर्व के अवसर पूरे देश में आध्यात्मिक प्रवचन आदि की धूम रही, जिसमें अनेक स्थानों के समाचार विगत अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं। अभी भी अनेक स्थानों से समाचार प्राप्त हो ही रहे हैं। उनमें से कुछ समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

*** जलगाँव (महा.) :** यहाँ पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर के तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा ली गई।

*** भीण्डर (राज.) :** यहाँ पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक व रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर सुबोध शैली में प्रवचन हुये।

*** दुर्ग (म.प्र.) :** यहाँ श्री शीतलनाथ जैन मंदिर में पण्डित हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल के तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुये। आपके चार प्रवचनों का लाभ पद्मनाथपुर कॉलोनी में भी मिला। 7 सितम्बर को समाज के शिक्षित वर्ग के लिये 'धर्म विज्ञान की कसौटी पर' विषय पर आपका उद्‌बोधन हुआ।

पर्व के पश्चात् रायपुर में मालवीय रोड पर दो दिन, शैलेन्द्रनगर में दो दिन एवं जैन मंदिर चूड़ी लाइन कॉलोनी में एक दिन आपके प्रवचनों का आकस्मिक लाभ समाज को मिला। दोपहर में प्रतिदिन तत्त्वचर्चा का आयोजन किया गया एक दिन आपने पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का सटीक समाधान दिया।

*** बीना (म.प्र.) :** यहाँ बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा दोनों समय दसधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री द्वारा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** पंडरपुर (महा.) :** यहाँ श्री आदिनाथ जैन मंदिर में पण्डित विनोदकुमारजी गुना के प्रात: प्रवचनसार, दोपहर में दसधर्म व रात्रि में करणानुयोग की उपयोगिता पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

*** डांडा इटावा (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित गोकुलचन्दजी 'सरोज' के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक व रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में अन्य श्री पंसारी टोला मंदिरजी में प्रवचन होते थे।

*** गढ़ाकोटा (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जैन जलेसर के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दसधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये।

*** टीकमगढ़ (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित श्रेणिकजी शास्त्री जबलपुर के तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुये साथ ही ब्र.मीना बहन के भी प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर 17,000 रुपये का सत्साहित्य घर–घर पहुँचा।

*** खनियांधाना (म.प्र.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुबोधकुमारजी सिंघई सिवनी के प्रात: उपदेशरत्नमाला, दोपहर में नियमसार व रात्रि में दसधर्मों पर प्रवचन हुये। साथ ही प्रतिदिन दशलक्षण विधान व सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। आपके अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, पण्डित ताराचन्दजी पटवारी एवं पण्डित संजयजी जैन के प्रवचनों का लाभ मिला।

*** अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय में डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र व रात्रि में दसधर्मों पर सुबोध शैली में प्रवचन हुये। प्रात: पण्डित सुनीलजी धवल के निर्देशन में दशलक्षण मण्डल विधान व रात्रि में श्री प्रकाशचन्दजी पाण्ड्या के संयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** थानागाजी (राज.) :** यहाँ पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड के प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक व रात्रि में दसधर्म पर प्रवचन हुये। सांस्कृतिक कार्यक्रम पं.करणजी शाह ने कराये। **(शेष पृष्ठ 5 पर ...)**

मूक जीवों की चीत्कार सुननेवाला कौन ? मानव होकर भी इतनी निर्दयता क्यों ?

- **क्या आपको जैन कहलाने का अधिकार है ?**
- **क्या आप भगवान महावीर को मानते हैं ?**
- **क्या आपके हृदय में करुणा है ?**
- **क्या आप मुनिराजों की वाणी पर श्रद्धा करते हैं ?**

यदि हाँ तो –
- पटाखे फोडकर अनंत जीवों की हत्या करके आप क्या बताना चाहते हैं ?
- ''जियो और जीने दो'' का अमर संदेश देनेवाले भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण दिवस पर हिंसा का ताण्डव मत करिये। हमें तो अग्नि की आंच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं। छोटी सी आवाज से हमारे बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों का मरण करने पर दया क्यों नहीं आती ?

जरा सोचिये ह्न पटाखे फोड़ने से क्या मिलेगा ?

१. **अनंत निर्दोष जीवों की हत्या।** २. **वायु प्रदूषण एवं आग लगने से क्षति।** ३. **स्वास्थ्य हानि।**
४. **करोड़ों रुपयों का नुकसान।** ५. **भगवान की वाणी का अपमान।** ६. **गंदगी का साम्राज्य।**
७. **आँखों पर बुरा असर।** ८. **मुनिराजों के उपदेशों की अवहेलना।** ९. **अनंत पाप का बंध।**

क्या आप जानते हैं ? प्रतिवर्ष पटाखो से २ लाख लोग अपंग होते हैं, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष २०० करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान होता है, पटाखों से प्रतिवर्ष ७० हजार बच्चों के आँखों की रोशनी कम या समाप्त हो जाती है, पटाखा फैक्ट्री के कर्मचारियों की दुर्घटनाओं में मृत्यु हो जाती है।

अत: हमें ही सोचना है कि यह अहिंसा के सम्राट का निर्वाण महापर्व है या हिंसा के यमराज का ?

निवेदक – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन (रजि.) सर्वोदय, 702, फूटाताल जबलपुर–2 (म.प्र.) मो. 093009 73705

विश्व की एक अद्‌भुत घटना

(श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के सलाहकार बोर्ड के अधिवेशन में अध्यक्षपदीय उद्‌बोधन में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' द्वारा व्यक्त किये गये विचार जन–जन की जानकारी के लिए प्रस्तुत हैं – संजीव गोधा, प्रबंध संपादक)

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट जो काम कर रहा है, उसकी जितनी भी गतिविधियाँ हैं; उनमें यह महाविद्यालय सबसे प्रमुख गतिविधि है। महाविद्यालय और उसके साथ में उन्हीं विद्यार्थियों द्वारा लगाया जानेवाला यह शिविर, जिसमें श्री टोडरमल स्मारक और आदरणीय डॉ. साहब (डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल) का इसकी व्यवस्था में तन–मन से पूरा सहयोग रहता है, तन–मन से और धन से भी पूरा सहयोग रहता है।

ट्रस्ट ने इस महाविद्यालय की स्थापना श्री टोडरमल स्मारक भवन के छत की नीचे की। आदरणीय श्री बाबूभाई की सूझबूझ से तीस वर्ष पहले यह कार्य प्रारम्भ हुआ, लेकिन यदि इस महाविद्यालय की सफलता के लिए कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति, प्रतिभाशाली विद्वान, तत्त्वज्ञ, पूज्य गुरुदेव के तत्त्वों को जिसने जाना है, समझा है – ऐसा पुरुष संचालक के रूप में नहीं मिलता तो क्या होता ?

यद्यपि महाविद्यालय की स्थापना ट्रस्ट के द्वारा हुई और ट्रस्ट ही उसका आर्थिक भार वहन करता है; लेकिन इस महाविद्यालय में छात्रों का आना, उन छात्रों का चुनाव करना, उनके शिक्षण की व्यवस्था करना और फिर शिक्षित होकर उन छात्रों का सारे देश में फैल जाना – ये जो घटना यहाँ जयपुर में हुई है, वह केवल जयपुर की नहीं; लेकिन सममुच सारे विश्व की एक अद्‌भुत घटना है। ऐसी गतिविधियाँ न तो जैन समाज में आजतक चली और भविष्य की तो मैं क्या कहूँ ?

जीवन्त रहे हमारे डॉ. साहब (डॉ. भारिल्ल) और उनके बड़े भ्राता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल; जिनके परिश्रम से ही नहीं, उनकी विविधमुखी प्रतिभा से जो छात्र तैयार हुये, वे हमारी समाज के रत्न हैं। हमको पूज्य गुरुदेव के तत्त्वविचार के प्रचार के लिए यही तो जरूरत थी। यह एक बड़ी आवश्यकता की सहज पूर्ति हो रही है।

गुरुदेव श्री कानजी स्वामी एक बड़े महापुरुष तत्त्वसृष्टा हुए हैं। इस युग में यह बात हम किसी को कहे तो कोई माननेवाला नहीं है। लेकिन आज सहजभाव से अध्ययन के लिए छात्र यहाँ आते हैं और पाँच वर्ष तक या उसके आगे भी अध्ययन करते हैं। उनको अध्ययन की श्रृंखला में पूज्य गुरुदेव के तत्त्व का परिज्ञान कराया जाता है और वे उस तत्त्व को सत्य समझकर स्वीकार करते हैं।

'तुम गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की सीमा में आओ' – यह कहे बिना सहज ही वे छात्र डॉ. साहब के प्रयत्न से तैयार होते हैं और गुरुदेव के समर्थक बनते हैं। ''गुरुदेव एक महाप्रतापी पुरुष हुए हैं।'' – ये बात उनके मन में बैठ जाती है। आज जो गुरुदेव की अनेकान्त पद्धति और उसमें सम्यक् एकान्त की शुद्धात्मतत्त्व में विहार करने की प्रवृत्ति को न समझने के कारण सामान्य लोगों से लगाकर और बड़े–बड़े विद्वानों के द्वारा जो भ्रामक प्रचार किया गया; उस भ्रामक प्रचार के कारण जो विरोध प्रारम्भ हुआ, उस विरोध का इस महाविद्यालय के द्वारा स्वाभाविक ही अन्त हुआ है।

गुरुदेव के समर्थक, तत्त्वज्ञान के समर्थक, आगम के समर्थक, दिगम्बर जैनधर्म के समर्थक हजारों विद्यार्थी तैयार हो रहे हैं और वे जहाँ भी जाते हैं, ऊँचे पदों पर पहुँच जाते हैं; क्योंकि सरकार ने भी एक ऐसी व्यवस्था की है कि संस्कृत के परिज्ञान को बढ़ाने के लिए संस्कृत विद्यालय खोले। महाविद्यालय में भी संस्कृत की प्रधानता है। संस्कृत सीखकर वे संस्कृत विद्यालयों, कॉलेजों में, युनिवर्सिटियों में बड़े–बड़े पदों पर पहुँच जाते हैं। वह तत्त्वज्ञान उनके भीतर बैठ गया है, इसलिए वे निरन्तर अपने जीवन में, पूरे जीवन भर उस तत्त्वज्ञान का प्रचार और प्रसार स्वाध्याय के द्वारा, पाठशालाओं के द्वारा, शिविर आदि के द्वारा जहाँ भी रहते हैं, इस गुरुदेव के तत्त्व का प्रचार करते हैं।

पूज्य गुरुदेव और शुद्ध दिगम्बर जैनदर्शन की इससे अधिक प्रभावना क्या हो सकती है ? हम यह कल्पना करें कि तत्त्वज्ञानियों की संख्या बहुत हो तो यह संभव नहीं है। अज्ञानियों का बहुमत रहनेवाला है, पर विजय ज्ञानियों की होनेवाली है।

ज्ञान में कोई बहुमत और अल्पमत नहीं हुआ करता। एक हजार व्यक्तियों में नौ सौ निन्यानवें व्यक्ति एक हीरे को काँच कह रहे हो, लेकिन एक व्यक्ति जो जौहरी है, वह कहता है कि यह हीरा है, काँच नहीं तो विजय किसकी हुई ? भगवान महावीर के समय, भगवान आदिनाथ के समय भी उनका विरोध करनेवाले थे, इसलिए यह आश्चर्य करना नहीं है कि लोग गुरुदेव का विरोध क्यों करते हैं ? अज्ञानी का काम ही यही है कि ज्ञानी का विरोध करें।

मैं तो इस महाविद्यालय को एक ऐसी फैक्ट्री मानता हूँ कि जिसमें चौबीस घंटे उत्पादन होता है और आगे की बात को क्या कहें ? लेकिन यह महाविद्यालय और दोनों भारिल्ल बन्धु जीवन्त रहें और इस महाविद्यालय को चलाते रहें।

ये जो छात्र निकल रहे हैं, ऊँचे–ऊँचे पदों पर जा रहे हैं, वह तो लौकिक बात है, लेकिन उनके भीतर जो तत्त्वज्ञान समाविष्ट हुआ है, वह चिर–अनन्त समाविष्ट होता रहे और यह महाविद्यालय कभी विकृत न हो, इसका समापन न हो – ऐसी मंगल कामना करता हूँ। ●

(पृष्ठ 4 का शेष ..)

*** हरिद्वार (उत्तरांचल) :** यहाँ पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर के प्रात: विभिन्न विषयों पर, दोपहर में छहढाला व लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका व रात्रि में दसधर्मों पर प्रवचन हुये। आपकी प्रेरणा से लघुजैन सिद्धान्त प्रवेशिका की रविवारीय कक्षा प्रारंभ की गई।

*** सूरत (गुज.) :** यहाँ पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री बड़ामलहरा के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक व रात्रि में दसधर्मों पर प्रवचन हुये तथा अन्य उपनगर नवसारी में पण्डित चैतन्यजी सातपुते व पण्डित संतोषजी बोगार के दोनों समय प्रवचन हुये। आपके द्वारा ही यहाँ पाठशाला की स्थापना कर उसे विधिवत् संचालित किया जा रहा है।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 60

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

आचार्य के स्वरूप के संबंध में उनका कहना है कि आचार्य बालक भी न हों, वृद्ध भी न हों और बीमार भी न हों; आचार्य तो ज्ञानवृद्ध होना चाहिए। आचार्य वयविशिष्ट, ज्ञानविशिष्ट एवं देहविशिष्ट होना चाहिए। आचार्य यदि बालक होंगे तो अनुभवी नहीं होंगे और दूसरे साधुओं को भी उनकी बात मानने में संकोच होगा; इसलिए आचार्य को वयविशिष्ट होना चाहिए। आचार्य वृद्ध नहीं होना चाहिए। जब वे अपनी चर्या ही मुश्किल से निभा पाएंगे, तो दूसरों से क्या कहेंगे। जब वे स्वयं शिथिलता का अनुभव करेंगे, तो कठोरता के पक्षपाती कैसे होंगे ? इसप्रकार वे सबकी शिथिलता को भी आसानी से बर्दाश्त करेंगे।

अत्यधिक जवान व्यक्ति भी आचार्य नहीं बन सकते; क्योंकि यदि आचार्य जवान होंगे, तो उनकी अधिकांश शक्ति यौवन के उद्रेक से संघर्ष करने में ही निकल जाएगी। इसीलिए आचार्य न तो बूढ़े हों, न जवान हों, न बालक हों। आचार्य प्रौढ़ होना चाहिए अर्थात् बालकपना निकल गया हो, गंभीरता आ गई हो, शरीर ज्यादा शिथिल न हुआ हो; जिससे उठने–बैठने में तकलीफ न हो – इसप्रकार प्रत्येक मुनिराज की शरीर और मन की स्थिति के अनुसार उत्सर्ग और अपवादमार्ग की मैत्री होनी चाहिए। 'मुनिराज को आचरण में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए' इसका निर्धारण या तो मुनिराज स्वयं करते हैं या उनके आचार्य करते हैं।

शास्त्रों में तो यह भी आता है कि आचार्य एक ही गलती के लिए दो मुनिराजों को अलग–अलग प्रायश्चित देते हैं। किसी मुनिराज को उसी गलती के लिए 4 दिन का उपवास करने के लिए कहते हैं और अन्य मुनिराज को उसी गलती के लिए 4 दिन तक प्रतिदिन आहार लेने के लिए कहते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है; क्योंकि जिन्हें 4 दिन का उपवास करने के लिए कहा गया, वे मुनिराज जवान थे; अत: प्रतिदिन आहार लेने से आलस्य आने से सामायिक में नींद आ गई थी एवं दूसरे मुनिराज थोड़े वृद्ध थे, उनकी कमर में दर्द होने से उठने–बैठने, चलने में तकलीफ होती थी अर्थात् उनमें कमजोरी आ गई थी, जिससे उन्हें सामायिक में नींद आ गई थी; इसलिए उन्हें 4 दिन तक प्रतिदिन आहार लेने के लिए कहा गया। इसीलिए यद्यपि दोनों का अपराध एक–सा था; तथापि उन्हें दण्ड अलग–अलग दिया गया। इसप्रकार आचार्य ऐसा आचरण करवाते हैं, जिससे उत्सर्गमार्ग और अपवादमार्ग की मैत्री बनी रहे।

देशकालज्ञ को भी, यह वह बाल–वृद्ध–श्रान्त–ग्लानत्व के अनुरोध से आहार–विहार में मृदु आचरण में प्रश्न होने से अल्पलेप होता ही है, लेप का सर्वथा अभाव नहीं होता; इसलिए उत्सर्ग अच्छा है।

देशकालज्ञ को भी, यदि वह बाल–वृद्ध–श्रांत–ग्लानत्व के अनुरोध से, आहार–विहार में मृदु आचरण में प्रवृत्त होने से अल्प ही लेप होता है; इसलिये अपवाद अच्छा है।

देशकालज्ञ को भी, यदि वह बाल–वृद्ध–श्रांत–ग्लानत्व के अनुरोध से, जो आहार–विहार है, उससे होनेवाले अल्पलेप के भय से उसमें प्रवृत्ति न करे, तो अति कर्कश आचरणरूप होकर अक्रम से शरीरपात करके देवलोक प्राप्त करके जिसने समस्त संयमामृत का समूह वमन कर डाला है; उसे तप का अवकाश न रहने से, जिसका प्रतीकार अशक्य है – ऐसा महान लेप होता है; इसलिये अपवाद निरपेक्ष उत्सर्ग श्रेयस्कर नहीं है।

देशकालज्ञ को भी, यदि वह बाल–वृद्ध–श्रांत–ग्लानत्व के अनुरोध से आहार–विहार से होनेवाले अल्पलेप को न गिनकर उसमें यथेष्ट प्रवृत्ति करे, तो अपवाद से होनेवाले अल्पबन्ध के प्रति असावधान होकर उत्सर्गरूप ध्येय को चूककर अपवाद में स्वच्छन्दतापूर्वक प्रवर्ते तो, मृदु आचरणरूप होकर संयम विरोधी को जिसका प्रतीकार अशक्य है – ऐसा महान लेप होता है; इसलिए उत्सर्ग निरपेक्ष अपवाद श्रेयस्कर नहीं है।

उत्सर्ग और अपवाद के विरोध से होनेवाले आचरण का दु:स्थितपना सर्वथा निषेध्य है; इसीलिए परस्पर सापेक्ष उत्सर्ग और अपवाद से जिसकी वृत्ति प्रगट होती है – ऐसा स्याद्वाद सर्वथा अनुसरण करने योग्य है।

इस गाथा के साथ ही आचरणप्रज्ञापन नामक अधिकार समाप्त हो जाता है; तदनन्तर गाथा 232 से मोक्षमार्गप्रज्ञापन अधिकार प्रारंभ होता है। इस अधिकार में गजब की बात तो यह है कि इस अधिकार का नाम तो मोक्षमार्गप्रज्ञापन है; लेकिन इसमें आचार्य ने जोर स्वाध्याय पर दिया है।

इस अवान्तर अधिकार की पहली गाथा इसप्रकार है –

एयग्गगदो समणो एयग्गं णिच्छिदस्स अत्थेसु।
णिच्छित्ती आगमदो आगमचेट्ठा तदो जेट्ठा।।२३२।।

(हरिगीत)

स्वाध्याय से जो जानकर निज अर्थ में एकाग्र हैं।
भूतार्थ से वे ही श्रमण स्वाध्याय ही बस श्रेष्ठ है।।२३२।।

श्रमण एकाग्रता को प्राप्त होता है; एकाग्रता पदार्थों के निश्चयवान के होती है; पदार्थों का निश्चय आगम द्वारा होता है; इसलिए आगम में व्यापार मुख्य है।

इस गाथा में यह कहा है कि श्रमण एकाग्रतावाला होता है। एकाग्रता में 'एक' का अर्थ त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा है और 'अग्रता' का तात्पर्य जिसकी ओर उपयोग की मुख्यता है। इसप्रकार 'एकाग्रता' का तात्पर्य त्रिकाली ध्रुव आत्मा की ओर उपयोग करना है। एकाग्रता के बिना श्रमणता अर्थात् मुनिपना नहीं होता। एकाग्रता–जिसने पदार्थों को अच्छी तरह जाना है–उसको ही होती है। जिसने वस्तु का स्वरूप ही नहीं समझा है, उसे एकाग्रता नहीं हो सकती। पदार्थों का निश्चय आगम से ही होता है।

इसप्रकार गाथा में आचार्य ने स्वाध्याय पर जोर दिया है। यह एक ऐसी गाथा है; जिसे दीवालों पर लिखा जाना चाहिए। मुझे भी यह गाथा इतनी प्रिय लगी कि मैंने इसका संकलन कुन्दकुन्दशतक में भी किया है।

इसके बाद ''आगमहीन के कर्मक्षय नहीं होता'' – ऐसा प्रतिपादन करनेवाली गाथा 233 इसप्रकार है –

आगमहीणो समणो णेवप्पाणं परं वियाणादि।
अविजाणंतो अत्थे खवेदि कम्मणि किध भिक्खू।।२३३।।

(हरिगीत)

जो श्रमण आगमहीन हैं वे स्व–पर को नहिं जानते।
वे कर्मक्षय कैसे करें जो स्व–पर को नहिं जानते।।२३३।।

आगमहीन श्रमण आत्मा को (निज को) और पर को नहीं जानता। पदार्थों को नहीं जानता हुआ भिक्षु कर्मों को किसप्रकार क्षय करे ?

इस गाथा में यह कहा गया है कि जो श्रमण आगमहीन है, वह सही रूप से न अपने आत्मा को जानता है और न ही पर को जानता है तथा जो आत्मा को नहीं जानता है, वह कर्मों का नाश कैसे करेगा ? इसलिए आगम का स्वाध्याय करना ही सर्वश्रेष्ठ है ।

तदनन्तर, 'मोक्षमार्ग पर चलनेवालों को आगम ही एक चक्षु है' – ऐसा उपदेश करनेवाली 234 वीं गाथा इसप्रकार है –

आगमचक्खू साहू इंदियचक्खूणि सव्वभूदाणि।
देवा य ओहिचक्खू सिद्धा पुण सव्वदो चक्खु।।२३४।।

(हरिगीत)

साधु आगमचक्षु इन्द्रियचक्षु तो सब लोक है।
देव अवधिचक्षु अर सर्वात्मचक्षु सिद्ध हैं।।२३४।।

साधु आगमचक्षु हैं, सर्वप्राणी इन्द्रियचक्षु हैं, देव अवधिचक्षु हैं और सिद्ध सर्वत:चक्षु हैं।

इस गाथा में यह कहा है कि साधु आगमचक्षु हैं और सारी दुनिया इन्द्रियचक्षु है। सारा लोक तो आँखों से देखनेवाला है और साधु आगम से देखते हैं। यदि आगम में लिखा है कि आलू में अनन्त जीव होते हैं तो फिर आलू में अनन्त जीव होते ही हैं। साधु उसमें जाँच करने नहीं बैठते हैं। इसप्रकार साधु आगम के आधार से अपना आचरण करते हैं; इसलिए वे आगमचक्षु हैं।

इस गाथा की टीका की अंतिम पंक्ति में लिखा है कि मुमुक्षुओं को सब कुछ आगमरूप चक्षु द्वारा ही देखना चाहिए। मैं इस पंक्ति की ओर इसलिए ध्यान आकर्षित करा रहा हूँ; क्योंकि हम सब मुमुक्षु हैं। मुमुक्षु को आगम के आधार से निर्णय करना चाहिए।

इसके बाद, 'आगमरूप चक्षु से सब कुछ दिखाई देता ही है' – ऐसा समर्थन करनेवाली गाथा 235 इसप्रकार है –

सव्वे आगमसिद्धा अत्था गुणपज्जएहिं चित्तेहिं।
जाणंति आगमेण हि पेच्छित्ता ते वि ते समणा।।२३५।।

(हरिगीत)

जिन–आगमों से सिद्ध हों सब अर्थ गुण–पर्यय सहित।
जिन–आगमों से ही श्रमणजन जानकर साधें स्वहित।।२३५।।

समस्त पदार्थ अनेकप्रकार की गुण–पर्यायों सहित आगमसिद्ध हैं। उन्हें भी वे श्रमण आगम द्वारा वास्तव में देखकर जानते हैं।

इस गाथा में यह कहा है कि सभी पदार्थ – द्रव्य–गुण–पर्याय आगम से ही सिद्ध हैं। आगम के बिना हम यह भी निर्णय नहीं कर सकते हैं कि क्या खाद्य है और क्या अखाद्य ?

अरे भाई ! विभिन्न खाद्य–अखाद्य पदार्थों की जानकारी हमें विभिन्न आगमों से ही प्राप्त होती है। हमें क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए – इसका निर्धारण हम अपने ज्ञान से नहीं कर सकते।

यदि हम आगम को नहीं मानेंगे तो फिर यह भी नहीं कह सकते कि २४ तीर्थंकर हुए हैं। बहुत–सी बातें हम ऐसी भी मानते हैं, जो हमारे उन पूर्वजों ने बताई हैं, जिन्हें हमने देखा भी नहीं है। यदि हम आगम नहीं माने तो हम यह भी नहीं बता सकते कि हमारे बाप के बाप भी थे।

अरे भाई ! पूर्वजों के द्वारा बताई हुई बात को ही आगम कहते हैं। लौकिक मामले में भी आगम है। आगम से ही समस्त निर्णय होते हैं; अत: मुमुक्षुओं को भी आगमचक्षु होना चाहिए।

अब, आगमज्ञान–तत्त्वार्थश्रद्धान–संयतत्व का युगपत्पना होने पर भी, आत्मज्ञान मोक्षमार्ग का साधकतम – यह समझानेवाली 238वीं गाथा इसप्रकार है –

जं अण्णाणी कम्मं खवेदि भवसयसहस्सकोडीहिं।
तं णाणी तिहिं गुत्तो खवेदि उस्सासमेत्तेण।।२३८।।

(हरिगीत)

विज्ञ तीनों गुप्ति से क्षय करें स्वासोच्छ्वास में।
ना अज्ञ उतने कर्म नाशे भव हजार करोड़ में।।२३८।।

जो कर्म अज्ञानी लक्षकोटि भवों में खपाता है, वह कर्म ज्ञानी तीन प्रकार (मन–वचन–काय) से गुप्त होने से उच्छ्वासमात्र में खपा देता है।

इस गाथा का पद्यानुवाद छहढ़ाला की चौथी ढ़ाल के पाँचवें छन्द में इसप्रकार किया है –

कोटि जन्म तप तपै, ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिनमाँहि त्रिगुप्ति तै सहज टरैं ते।।

आगमज्ञानी आत्मज्ञानी तो होते ही हैं। वह आगमज्ञान भी आत्म–ज्ञान के लिए ही है; क्योंकि यदि आत्मज्ञान नहीं करना हो तो आगमज्ञान की भी क्या जरूरत है ? मोक्षमार्ग पर चलने के लिए आगमज्ञान अत्यंत आवश्यक है। **(क्रमश:)**

'ध्रुवधाम महिला मण्डल' का गठन

श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संस्थापित रत्नत्रयतीर्थ **ध्रुवधाम** में 30 नवम्बर, 06 से होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के निमित्त से डॉ. विद्यावती जैन गनोडा की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें '**ध्रुवधाम महिला मण्डल**' का गठन किया गया। कार्यकारिणी निम्नप्रकार है ह्न **संरक्षक** –श्रीमती निर्मला ज्ञायक, **अध्यक्ष** –श्रीमती रजनी जैन, **उपाध्यक्ष** –श्रीमती विमला जैन व श्रीमती कैलाश ज्ञायक, **सचिव** –डॉ. ममता जैन, **कोषाध्यक्ष** –श्रीमती कल्पना जैन, **प्रचार–प्रसार मंत्री** –श्रीमती लता लूणदिया, **सांस्कृतिक मंत्री** –श्रीमती सीमा ज्ञायक को सर्व सम्मति से चुना गया। ●

2 अक्टूबर 2006, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

राजधानी एक्सप्रेस का पारसनाथ स्टेशन पर ठहराव

भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाणोत्सव के अवसर पर **नई दिल्ली-हावड़ा राजधानी एक्सप्रेस (2301 एवं 2302)** का **पारसनाथ स्टेशन** पर ठहराव आरम्भ हो गया है।

यह गाड़ी नई दिल्ली से शुक्रवार को छोडकर सप्ताह के अन्य छह दिन सायंकाल 5 बजे चलकर अगले दिन प्रात: 6.17 पर पारसनाथ स्टेशन पहुँचेगी और इसीप्रकार रविवार को छोडकर सप्ताह के अन्य छह दिन पारसनाथ स्टेशन से रात्रि 8.20 पर चलकर अगले दिन प्रात: 9.50 पर नई दिल्ली पहुँचेगी।

सम्मेदशिखरजी सिद्धक्षेत्र की वंदना के लिए जानेवाले यात्रियों के लिये पार्श्वनाथ स्टेशन सबसे नजदीक है; अत: वहाँ ट्रेन के ठहराव से यात्रियों को क्षेत्र की वंदना हेतु जाने में विशेष सुविधा रहेगी। इस सुविधा के लिये रेल मंत्री श्री लालूप्रसादजी यादव का जैन समाज द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

शिक्षक सम्मान से सम्मानित

श्री टोडरमल दि.जैन सि. महाविद्यालय के स्नातक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, उदयपुर को शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) के अवसर पर राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर के बिड़ला सभागार में माननीय शिक्षा मंत्री श्री घनश्यामजी तिवाड़ी के करकमलों से सम्मानित किया गया।

डॉ. जैन वर्तमान में रा.उ.मा.विद्यालय, बम्बोरा में प्राध्यापक (हिन्दी) के पद पर सेवारत हैं। श्रेष्ठ शैक्षिक रिकार्ड, परीक्षा परिणाम, लेखन कार्य व राष्ट्रीय कार्यक्रमों में योगदान आदि के फलस्वरूप 15 वर्ष की कार्यावधि में ही आपको यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है। एतदर्थ महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथ प्रदर्शक समिति की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनायें।

कला व संस्कृति का संगम

जिनेन्द्र कला केन्द्र इन्टरनेशनल, भीलवाड़ा (राज.) के श्री निहाल अजमेरा द्वारा प्रशिक्षित अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लिम्का बुक बर्ल्ड रिकार्ड होल्डर कुमारी वीणा अजमेरा व युनेस्को फैडरेशन (राज.) अवार्ड प्राप्त कुमारी चिंकल जैन (221 कलश धारिणी) दोनों किशोर नृत्यांगनाओं के मंत्र मुग्ध कर देनेवाले मनोरम कलश नृत्य को देखकर उनके साहस, संतुलन व साधना का अद्भुत परिचय प्राप्त होता है।

आप दोनों द्वारा देश के विभिन्न स्थानों के अतिरिक्त विदेश में सिंगापुर, बैंकाक में भी धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अवसर पर कलश नृत्य की मनभावन प्रस्तुति कई बार हो चुकी है। विगत माह लंदन में सम्पन्न हुये पंचकल्याणक के अवसर पर भी आप दोनों द्वारा इस नृत्य का 5 बार प्रदर्शन किया गया, जिससे कला व संस्कृति का अद्भूत परिचय वहाँ के लोगों को प्राप्त हुआ है। इसी के साथ ग्रेइज शहर में, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी, ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय एवं ग्लोबल हेडक्वार्ट्स में भी आपने अपनी कला से दर्शकों को अभिभूत कर दिया। आप दोनों को शुभकामनायें देते हुये जैन पथप्रदर्शक समिति आपके उज्जवल भविष्य की कामना करती है। **- प्रबन्ध सम्पादक**

वैराग्य समाचार

डॉ. जगदीशचन्द एवं पण्डित जतीशचन्द शास्त्री के लघु भ्राता एवं जनीशचन्द, दिनेशचन्द, नरेन्द्रकुमार, डॉ. जैनेन्द्रकुमार, विदुषी राजकुमारी जैन के बड़े भ्राता एवं डॉ. रवीश के पिता इन्दौर निवासी श्री सतीशचन्दजी का हार्ट की बिमारी के कारण 15 सितम्बर को 65 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। सतीशभाई धर्मात्मा एवं सत्यवादी पुरुष थे। आपके हृदय से मुमुक्षुभाई बहिनों के लिये निरन्तर धर्मभावना ही प्रकट होती थी। आपकी दिनचर्या का शुभारंभ प्रात: अभिषेक व पूजन से होता था। प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन सुनना उनकी दिनचर्या का अंग था। आप अपने परिवार के लिये प्रेरणास्रोत थे।

आप वर्ष में कई बार सोनगढ़ जाकर गुरुदेवश्री के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ लिया करते थे। स्वर्गवास के कुछ दिन पहले ही आपको इन्दौर अस्पताल में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक संबोधन का लाभ प्राप्त हुआ था, उसी का चिंतन अन्त तक करते रहे।

आपकी स्मृति में जैनपथ प्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को 501/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना !

श्री गुलाबचन्दजी भारिल्ल का निधन

हमारे 77 वर्षीय चचेरे भाई श्री गुलाबचन्दजी भारिल्ल, बरौदास्वामी (ललितपुर-उ.प्र.) का निधन णमोकार मंत्र के स्मरणपूर्वक हो गया है। आप अत्यन्त सरल परिणामी व सज्जन व्यक्ति थे।

आप हमारे साथ 3 वर्ष तक मुरैना महाविद्यालय में होनहार विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत भी रहे थे।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त करें - यही हमारी मंगल कामना है। **- रतनचन्द हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर**

साधना चैनल पर रात्रि 10.20 से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन-इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127